

Content

## अनुक्रमणिका

“रससिद्धान्तस्य मनोवैज्ञानिकं दार्शनिकञ्च मूल्याङ्कनम्”--

### अनुक्रमणिका

### पृष्ठसंख्या

|                                                                                                      |    |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| प्रस्तावना                                                                                           | 5  |
| प्रथमः परिच्छेदः                                                                                     | 13 |
| क-पृष्ठभूमिः                                                                                         | 14 |
| ख-रससिद्धान्तस्य पुरातनत्वम्                                                                         | 15 |
| ग-रससिद्धान्तस्य परिकल्पना                                                                           | 16 |
| घ-वेदादिशास्त्रेषु-उपनिषत्सु-रामायण-महाभारतादिषु ग्रंथेषु रसस्य मनोवैज्ञानिकं तथा दार्शनिकमनुशीलनम्। | 18 |
| ङ.-भरतनाट्यशास्त्रे-नटसूत्रे-कामसूत्रे च रसस्य दार्शनिकं मनोवैज्ञानिकं चानुशीलनम्।                   | 20 |
| द्वितीयो परिच्छेदः                                                                                   | 28 |
| च-मनोविज्ञानस्य स्वरूपं परिभाषा च।                                                                   | 29 |
| छ-मनोविज्ञाने चैतन्यस्य महत्ता आत्मानिरूपणञ्च।                                                       | 34 |
| ज-मनोविज्ञाने इन्द्रिय तथा शरीरनिरूपणम्।                                                             | 36 |
| झ-मनोधर्मनाडीचक्रादीनां निरूपणम्।                                                                    | 39 |
| ञ-ज्ञानात्मक मनोवृत्ति तथा संशयनिरूपणम्।                                                             | 42 |
| त-तर्कविपर्यय-ऊह-विकल्पनिरूपणम्।                                                                     | 43 |
| थ-स्मृति-प्रत्यभिज्ञा सुखदुःखादीनां निरूपणम्।                                                        | 45 |
| द-इच्छाचिकीर्षादिभावात्मकमनोवृत्तीनां निरूपणम्।                                                      | 47 |
| ध-अतीन्द्रियमनोधर्मनिरूपणम्।                                                                         | 49 |
| न-संस्कारनिरूपणम्।                                                                                   | 49 |
| प-निर्विकल्पक प्रत्यक्षनिरूपणम्।                                                                     | 50 |

|                                                      |    |
|------------------------------------------------------|----|
| फ-अलौकिक प्रत्यक्षनिरूपणम्।                          | 52 |
| ब-साक्षिप्रत्यक्षनिरूपणम्।                           | 54 |
| भ-अभावप्रत्यक्षनिरूपणम्।                             | 55 |
| म-जातिप्रत्यक्षनिरूपणम्।                             | 56 |
| य-प्रतिभा निरूपणम्।                                  | 58 |
| र-अनुमितौ शाब्दबोधे स्फोटवादे च मनस्तत्त्वम्। / रत्न | 60 |
| ल-मानसप्रान्तिनिरूपणम्                               | 64 |
| व-स्वप्ननिरूपणम्।                                    | 65 |

### तृतीयोपरिच्छेदः 74

|                                         |     |
|-----------------------------------------|-----|
| अ-रसस्य साम्प्रदायिकता।                 | 75  |
| आ-रसेष्वकाव्यनाट्ययोः अनिवार्य धर्मः।   | 77  |
| इ-रसोकाव्यस्यात्मा।                     | 81  |
| ई-विभिन्न संप्रदायेषु रसस्यव्यापकत्वम्। | 101 |
| (1) अलङ्कारः                            | 102 |
| (2) रीतिः                               | 103 |
| (3) ध्वनिः                              | 105 |
| (4) वक्तव्यः                            | 108 |
| (5) औचित्यम्                            | 112 |

### चतुर्थपरिच्छेदः 114

|                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| क-रसस्वरूपम्।                   | 115 |
| ख-रसस्य दार्शनिकं स्वरूपम्।     | 117 |
| ग-रसस्य मनोवैज्ञानिकं स्वरूपम्। | 131 |

### पञ्चमो परिच्छेदः 140

|                                                         |     |
|---------------------------------------------------------|-----|
| क-रसनिष्पत्ति विषयकानां विविधानामाचार्याणां सिद्धान्तः। | 141 |
| (1) उत्पत्तिवादः                                        | 144 |
| (2) अनुमितिवादः                                         | 154 |
| (3) अभिधावादः                                           | 165 |

|                                                                    |     |
|--------------------------------------------------------------------|-----|
| (4)अभिव्यक्तिवादः                                                  | 171 |
| षष्ठपरिच्छेदः                                                      | 187 |
| क-रससिद्धान्तस्य दार्शनिकं विवेचनम्।                               | 188 |
| ख-रससिद्धान्तस्य मनोवैज्ञानिकं विवेचनम्।                           | 208 |
| सप्तमपरिच्छेदः                                                     | 221 |
| य-रससिद्धान्तस्य भारतीय तथा पाश्चात्यमनोविज्ञान दृष्ट्या विवेचनम्। | 222 |
| र-विविधानां मनोभावानां मनोवैज्ञानिकं विवेचनम्।                     | 228 |
| ल-विभावानुभाव सञ्चारिभावानां मनोवैज्ञानिकं विवेचनम्।               | 231 |
| व-साधरणीकरण व्यापारस्य दार्शनिकं मनोवैज्ञानिकं चानुशीलनम्।         | 234 |
| अष्टमोपरिच्छेदः                                                    | 245 |
| क-रससिद्धान्तविरुद्धाक्षेपः समाधानं च                              | 246 |
| ख-उपसंहारः                                                         | 256 |
| संदर्भग्रंथा 266                                                   |     |